डॉ. अगस्त कोकेल, क्रॉनिकल्स, सत्र 20

घमंड की सज़ा, योआश

© 2024 गस कोकेल और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. ऑगस्ट कोकेल द्वारा इतिहास की पुस्तकों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 20 है, अभिमान की सज़ा।

हमने अपना अध्ययन अहज्याह के साथ समाप्त किया जो यहोशापात का पुत्र था। यहोशापात एक ऐसा राजा था जो इस्राएल के राजा अहाब के साथ पूरी तरह से उलझा हुआ था, और इसलिए उसका शासन यहूदा के लिए बहुत नकारात्मक था। अहज्याह का शासन बहुत छोटा था, केवल एक वर्ष, क्योंकि वह यहू के हमले में मारा गया था जब वह अरामियों के साथ अपने युद्ध से उबरने के बाद अहाब से मिलने गया था।

तो, इसने वास्तव में जेहोराम की पत्नी अतल्याह को राज करने वाली रानी बना दिया। और अतल्याह ने, ज़ाहिर है, दाऊद के सभी वंशजों को खत्म करने की कोशिश करना अपनी महत्वाकांक्षा बना ली थी क्योंकि उसका अपना बेटा अहज्याह, जो जेहोराम का बेटा था, अब मर चुका था। वह यहूदा के शासन में एक संपूर्ण परिवर्तन करने जा रही थी।

यह उस पुजारी के हस्तक्षेप से रोका गया जिसने दाऊद के वंशज योआश को बचाया था। योआश का शासन, जब तक वह पुजारी के निर्देशन में है, बहुत, बहुत अच्छा है। लेकिन हम इसे घमंड की सज़ा कहते हैं क्योंकि पुजारी के मर जाने के बाद योआश पूरी तरह से अपने रास्ते पर चला जाता है, और उसका राज्य और उसका शासन पूरी तरह से न्याय के अधीन हो जाता है।

इसलिए, इतिहासकार ने अथलिया द्वारा दाऊद के सभी वंशजों को नष्ट करने के प्रयास से शुरुआत की, लेकिन योआश के बचाव से यह विफल हो गया। इसलिए, इतिहासकार फिर बताता है कि योआश को कैसे छिपाकर सुरक्षित रखा गया। ऐसे समय में, जब वह लगभग सात वर्ष का होता है, पुजारी, बहुत सावधानी से, मंदिर के चारों ओर सुरक्षा व्यवस्था करता है ताकि नए राजा का राज्याभिषेक हो सके।

इसलिए, द्वारपाल, मंदिर और महल की रक्षा करने वाले लोगों को उस लड़के की रक्षा करने के लिए विशेष कर्तव्य सौंपे गए हैं जो राजा बनने वाला है। जब अथलिया, जो मंदिर से सटे महल में रहती है, वह सारा शोर सुनती है, तो वह जांच करने आती है। और, निश्चित रूप से, उस समय, उसे पुजारी के निर्देश पर गिरफ्तार कर लिया जाता है, और उसे मौत की सजा दी जाती है।

तो, उस समय, पुजारी, लोग और राजा एक वाचा में प्रवेश करते हैं। यह सबसे महत्वपूर्ण घटना बन गई क्योंकि यह दाऊद के राजवंश का संरक्षण था। और यह उस वाचा की पुनर्स्थापना है जो दाऊद ने परमेश्वर और लोगों के साथ की थी।

इसलिए, उपासना की शुद्धि होती है, और योआश की स्थापना होती है, जो यहूदा के लिए एक नए युग की शुरुआत करती है। इस समय, यहूदा राष्ट्र, यहूदा का गोत्र, अपने गठबंधनों से पूरी तरह

से अलग हो जाता है, जो यहोशापात के अधीन और अहाब के प्रभाव में उत्तर के साथ थे। इसलिए, यहाँ महायाजक के अधीन योआश का शासन है।

और योआश की कहानी का यह हिस्सा बहुत, बहुत अच्छा है। मंदिर का शुद्धिकरण किया जाता है, और मंदिर को खड़ा करने के लिए धन जुटाया जाता है। अब मंदिर के समर्थन के लिए लेवियों से एक निश्चित कर लिया जाता था।

लेकिन बेशक, लेवियों को मंदिर के रखरखाव के लिए उनके कर से बहुत खुशी नहीं थी, जिसका इस्तेमाल मरम्मत के लिए अतिरिक्त लागत के रूप में किया जा रहा था। इसलिए, यहाँ भी कहानी है, जैसा कि राजाओं में है, योआश द्वारा एक दान पेटी बनाने के बारे में। यह दान पेटी मंदिर के द्वार, मंदिर प्रांगण में रखी गई थी।

जब लोग मंदिर में पूजा करने और अपना चढ़ावा लाने आते थे, तो वे इस संग्रह बॉक्स में एक अतिरिक्त चढ़ावा दे सकते थे, जो मंदिर को सहारा देने के लिए धन था। राजाओं, साथ ही इस समय राजाओं का अनुसरण करने वाले इतिहासकारों ने बताया कि यह कितना सफल रहा। मंदिर को सहारा देने, इसे बहाल करने और इसे वह सब बनाने के लिए पर्याप्त से अधिक धन था जो इसे चाहिए था।

योआश की कहानी का यही अच्छा हिस्सा है। लेकिन फिर पुजारी की मृत्यु हो जाती है। और योआश, जब पुजारी के संरक्षण में नहीं रहता, तो वह अपने रास्ते पर चल पड़ता है।

यहीं पर वास्तव में घमंड का न्याय होता है क्योंकि योआश परमेश्वर के सामने खुद को नम्र नहीं करता। वास्तव में, महायाजक की मृत्यु के तुरंत बाद, मंदिर विदेशी प्रभाव के तहत समझौता कर लेता है। योआश किसी भी धर्मनिरपेक्ष राजा की तरह काम करना शुरू कर देता है, जो राजनीतिक रूप से अच्छा लग सकता है, लेकिन वे वास्तव में मंदिर और उसके बारे में क्या है, इसका प्रतिनिधित्व नहीं कर रहे हैं।

और बेशक, इतिहासकार के दृष्टिकोण से, यह बहुत, बहुत नकारात्मक है। अब, महायाजक का बेटा जकर्याह योआश के पास इस तथ्य के बारे में चेतावनी लेकर आता है कि मंदिर की इस लापरवाही और पहले से किए गए सभी अच्छे कामों को उलटने के लिए परमेश्वर का न्याय आने वाला है। योआश इस पर अच्छी प्रतिक्रिया नहीं देता और जकर्याह को मार डालता है।

हो सकता है कि न्यू टेस्टामेंट में इसका संदर्भ हो, जहाँ यीशु ने इस बारे में बात की है कि तुमने अब्राहम से लेकर जकर्याह तक सभी नबियों को कैसे मार डाला या ऐसा ही कुछ। और इसलिए, यह वास्तव में उत्पत्ति की एक पुस्तक है। और क्योंकि हिब्रू बाइबिल में, इतिहास बाइबिल की अंतिम पुस्तक है, यहाँ इस नबी के मारे जाने का संदर्भ है।

यह वास्तव में आश्चर्यजनक है कि इस पुजारी के पिता, जो पूरी तरह से संरक्षण के लिए जिम्मेदार थे, ने एक शिशु के रूप में उसे सात साल की उम्र तक पाला और फिर उसे प्रभु के सभी तरीकों से प्रशिक्षित किया। यह वास्तव में विडंबना है कि यह राजा अब इतना उलटा हो सकता है कि वह

उस व्यक्ति के बेटे को मौत के घाट उतार दे जिसने उसकी जान बचाई थी और राज्य को बचाया था। आप सोच रहे होंगे कि ये चीजें कैसे होती हैं? इतिहासकार का जवाब काफी सरल होगा।

जब आप परमेश्वर के राज्य को नहीं समझते, जब आप इसे अपना राज्य बनाना शुरू करते हैं, जब आप यह नहीं समझते कि आप जिसका प्रतिनिधित्व करते हैं वह परमेश्वर का राज्य है, जब आप सोचते हैं कि आप अपनी शक्ति और अपने सभी कौशलों से शासन करते हैं, तो आप अचानक ऐसे क्रूर कृत्यों की ओर मुड़ जाते हैं, जो बाहर से देखने पर, बिलकुल अकल्पनीय लगते हैं। आप अपने उत्तराधिकारी और उस व्यक्ति के बेटे को क्यों मार डालेंगे जिसने आपकी जान बचाई है? लेकिन ऐसा ही होता है, और निश्चित रूप से, इसके परिणाम होते हैं। योआश का शासन वैसा नहीं निकलता जैसा उसने उम्मीद की होगी क्योंकि वह खुद पर और अपनी शक्ति पर भरोसा करना शुरू कर देता है।

उनके सामने आने वाले संकटों में से एक है अरामियों का हमला। अब, इस समय, असीरिया राष्ट्र, जो आगे चलकर एक बड़ा खतरा बनने जा रहा है, वास्तव में कनान और फिलिस्तीन के क्षेत्र में बहुत प्रभावशाली नहीं है, न ही मिस्र, जो कभी बहुत प्रभावशाली शक्ति हुआ करता था। और इसलिए इसने अरामियों जैसे राष्ट्रों को अपने प्रभाव और अपनी शक्ति का विस्तार करने का अवसर दिया।

और इसमें कोई संदेह नहीं है कि अरामी लोग एज़ियोन्गबर बंदरगाह तक पहुँचना चाहते थे, जिसका ज़िक्र हमने इन सत्रों में कई बार किया है क्योंकि यह अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए एक बड़ा आर्थिक लाभ था, जो हमेशा हमारी समृद्धि और हमारी भलाई का आधार रहा है। इसलिए, अरामी लोग उस क्षेत्र पर आक्रमण कर रहे थे जो योआश का था, जो जॉर्डन के पूर्वी किनारे पर स्थित क्षेत्र था। हजाएल ने उस क्षेत्र को वापस पाने के लिए हमला किया, लेकिन स्पष्ट रूप से, इस बीच जो कुछ भी हुआ वह यह था कि योआश के कार्यो ने उसके अपने राज्य में बहुत अधिक असंतोष और संघर्ष पैदा कर दिया था।

यह, ज़ाहिर है, काफी समझ में आता है। महायाजक द्वारा निर्देशित व्यक्ति से अपने बेटे को मारने के लिए आगे बढ़ना बहुत आक्रोश पैदा करेगा। और योआश को उसके अपने दरबार के भीतर एक साजिश के तहत मार दिया जाता है।

और इसलिए यह हमें उसके बेटे अमाज्या के शासनकाल की ओर ले जाता है। अमाज्या का शासनकाल कुछ हद तक योआश के शासनकाल जैसा है, जिसमें इसके अच्छे पहलू हैं, लेकिन यह न्याय की आपदा में भी समाप्त होता है क्योंकि इतिहासकार के सिद्धांतों का पालन नहीं किया जाता है। बेशक, इन सभी चीजों के लिए सामाजिक और राजनीतिक कारण मिल सकते हैं, लेकिन इतिहासकार को उन सभी में कोई दिलचस्पी नहीं है क्योंकि वह अपने दिमाग में स्पष्ट है कि भगवान इन सभी चीजों के प्रभारी हैं, अदालत की सभी साजिशों और बाकी सब चीजों के बावजूद।

वह जानता है कि यह योआश या अमाज्याह का सिंहासन नहीं है। यह परमेश्वर का सिंहासन है। ये लोग चाहे जो भी करें, परमेश्वर अभी भी अपने सिंहासन पर है, और अपने लोगों को छुड़ाने के लिए अपनी वाचा स्थापित करने का परमेश्वर का उद्देश्य पूरा और स्थापित होने जा रहा है।

और बेशक, इसका सबूत यह है कि उनके समय में यहूद प्रांत में उनका अस्तित्व, उनका अस्तित्व ही था। लेकिन हम अपने पिता के उत्तराधिकारी अमाज्याह के शासनकाल में देखते हैं कि वह अपनी शक्ति को मजबूत करता है, लेकिन समझौता एदोम के खिलाफ उसके युद्ध में है। अब, यह कुछ हद तक उसी विस्तारित युद्ध का हिस्सा है जिसमें उसके पिता शामिल थे, इन व्यापार मार्गों और शिपिंग मार्गों पर नियंत्रण पाने की कोशिश कर रहे थे।

और इसलिए अमाज्याह फिर से वही करने लगता है जो पहले यहोशापात ने किया था, और जिसके कारण राजा की माँ अतल्याह की पूरी तरह से तबाही मच गई थी, उसने दाऊद के पूरे वंश को खत्म करने की कोशिश की थी। खैर, अमाज्याह फिर से उसी रास्ते पर चला जाता है। अब, राजनीतिक दृष्टिकोण से, यह बिल्कुल सही समझ में आता है क्योंकि इज़राइल एक बहुत बड़ी सैन्य शक्ति थी, एक बहुत बड़ा प्रभाव था, और एदोम के खिलाफ युद्ध के मामले में हस्तक्षेप करने में बहुत सक्षम था।

लेकिन फिर, जब अमस्याह उस युद्ध में सफल हो जाता है, तो वह इस्राएलियों के खिलाफ अपनी सीमा का विस्तार स्थापित करना चाहता है। और इसलिए, वह वास्तव में इस्राएल के राजा के खिलाफ युद्ध भड़काता है, और इस्राएल का राजा बहुत ही स्पष्ट है। इस्राएल का राजा उसे एक रूपक और एक कहानी के माध्यम से बताता है कि यह शुद्ध मूर्खता है।

तुम इस्राएल के सामने कुछ भी नहीं हो, तुमने एदोम के खिलाफ गठबंधन में जो शक्ति इस्तेमाल की है। लेकिन यह अमाज्याह को रोक नहीं पाया, क्योंकि उसे अपनी महानता पर पूरा भरोसा है। और इसलिए, वह इस्राएल के खिलाफ इस विनाशकारी युद्ध में फंस गया, जिसका इतिहासकार ने विस्तार से वर्णन किया है कि कैसे वह पराजित हुआ, और इस्राएल ने यरूशलेम की दीवारों तक यहूदा पर आक्रमण किया और वास्तव में पूरे कबीले, पूरे यहूदा राज्य को अपमानित किया।

इसलिए अमाज्याह का शासन पूरी तरह से बर्बाद हो जाता है, उसे एक विदेशी शक्ति द्वारा बंधक बना लिया जाता है। यह इतिहासकार द्वारा सभी घटनाओं की प्रस्तुति में एक और उदाहरण है कि खुद पर भरोसा करना और अपने राज्य की स्थापना में अपनी शक्ति का उपयोग करने की कोशिश करना काम नहीं करता है। यह योआश के लिए काम नहीं आया और अमाज्याह के लिए भी काम नहीं करता।

यह चीजों के प्रति गलत दृष्टिकोण है। इसलिए यहाँ दो उदाहरण दिए गए हैं जो क्रॉनिकलर ने हमें नकारात्मक पक्ष से दिए हैं। जो लोग खुद को विनम्र नहीं बनाते, कम से कम अपने शासनकाल के अंत में, वे खुद को विनम्र नहीं बनाते।

वे प्रभु का ध्यान नहीं चाहते। और फिर, बेशक, उनकी बेवफाई उन्हें पूरी तरह से बदनामी में ले जाती है। यही वह सबक है जिसे इतिहासकार अपने पाठकों को सिखाना और याद रखना चाहता है।

बेवफ़ाई की हमेशा कीमत चुकानी पड़ती है।

यह डॉ. ऑगस्ट कोकेल द्वारा इतिहास की पुस्तकों पर दी गई शिक्षा है। यह सत्र 20 है, घमंड की सज़ा।